क्या धरती पर जीवन बचेगा?

यह जानकारी आप तक पहुंचाने का उद्देश्य डरना या डराना नहीं है बल्कि धरती पर सारे जीव-जगत को उत्पन्न खतरे पर चर्चा करने की एक कोशिश मात्र है; ताकि हम अपने व्यस्त जीवन में से कुछ समय निकाल कर इस खतरे के बारे में सामूहिक (साझी) और सही राय बना सके। यह सवाल हमारे लिए जीवन या मौत का सवाल बन गया है।

हमारी आकाशगंगा के सौरमण्डल में धरती समेत कुल नौ (अब आठ) ग्रह तथा 52 उपग्रह हैं। इनमें धरती ही ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन है और किसी अन्य ग्रह पर जीवन नहीं है। धरती पर जीवन क्यों है इसका सीधा जवाब यह है कि जीवन के अस्तित्व एवं विकसित होने का खास वातावरण धरती पर ही है, जिसे हम पर्यावरण कहते हैं। आज धरती का यह पर्यावरण इस रफ्तार से बिगड़ रहा है कि धरती पर जीवन का बचना मुश्किल बन रहा है। इसके बारे में हमारी सामूहिक (साझी) राय नहीं बनी तो धरती पर जीवन खत्म भी हो सकता है, यानि आज विद्यमान मानव जीवन सहित सभी जीव-जन्तु, वनस्पति धरती पर से हमेशा के लिए समाप्त हो जायेंगे।

मानव समाज के अस्तित्व एवं विकसित होने के दो बुनियादी पहलू हैं, एक प्रकृति (या हमारा पर्यावरण) और दूसरा मानव समाज। आज हमारे सामने मुख्य तौर पर दो ही चुनौतियां हैं। एक पर्यावरण का खराब होना और दूसरी मानव और मानव के बीच रिश्तों में इन्सानियत की कद्र कम होते जाना है। पहली चुनौती हमारे वातावरण—हवा, जमीन, मिट्टी, जंगल, पानी, जैव-विविधता, समुद्र आदि पर भारी दबाव होना है, जिससे ये बर्बाद हो रहे हैं। हवा इतनी प्रदूषित हो चुकी है कि दुनिया के 24000 लोग प्रतिदिन गंदी हवा के कारण मौत के मुंह में चले जाते हैं। समाज में होने वाली सबसे ज्यादा मौतों का कारण प्रदूषित हवा बन गई है। हमारे देश के सारे बड़े शहर हवा की गुणवत्ता की दृष्टि से बहुत ही निम्न स्तर पर है। दिल्ली दुनिया का सबसे ज्यादा प्रदूषित शहर बन गया है। हवा की कोई सीमा (Border) नहीं होती, इसलिए दुनिया के 92 प्रतिशत लोग गैर सेहतमंद हवा में रह रहे हैं। हवा के बाद जीवन की दूसरी बुनियादी जरूरत पानी है। इसकी हालत भी दयनीय है। पानी की गुणवत्ता में लगातार कमी हो रही है। जिसका प्रमाण पानी का बिकना है। आज से 25-30 साल पहले कोई सोच भी नहीं सकता था कि पानी भी बाजार में बिकने वाली चीज बन जायेगी। आज पानी बिक रहा है। हवा बिकने के किनारे है। रसायन आधारित खेती ने हमारी भूमि का स्वास्थ्य खराब कर दिया है, जिससे भूमि का स्वास्थ्य रसायन आधारित खादों और स्प्रे पर निर्भर हो गया है, साथ ही हमारी सम्पूर्ण भोजन शृंखला में जहर घुल गया है। जहरीला (प्रदूषित) भोजन मानव जाति में तरह-तरह की बीमारियों को पैदा करके तिल-तिल कर मरने को मजबूर कर रहा है। जंगल सबसे ज्यादा पीड़ित है। एक लाख 92 हजार वर्ग किलोमीटर जंगल हर वर्ष काटे जा रहे हैं। छः अरब हैक्टेयर जंगल कट चुके हैं। 4 अरब हैक्टेयर जंगल बाकी बचे हैं जो 2035 तक लगभग सारे नष्ट हो जायेंगे।

जैव-विविधता का हाल यह है कि 737 जीव-जन्तुओं और 121 वनस्पति की प्रजातियां खत्म हो चुकी हैं। 2261 प्रजातियां खतरे में हैं। 11 प्रजातियां मरने के किनारे हैं। समुद्र की हालत धरती से भी बुरी है। 50 प्रतिशत समुद्री जीव खत्म हो चुके हैं। धरती के खनिज पदार्थ लगातार घट रहे हैं। एक अंदाजे के मुताबिक धरती की 52 प्रतिशत जीवन शक्ति समाप्त हो गई है। हमारे समाज की जीवन-शैली ताप बढ़ाने वाली गैसों की मात्रा वातावरण में लगातार बढ़ा रही है। जिसके कारण धरती का ताप बढ़ रहा है। एक अंदाजा है कि धरती का औसत तापमान आने वाले 10 सालों में डेढ़ डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जायेगा।

दूसरी चुनौती मानव समाज में अमानवीयकरण या गैर इंसानियत का तेजी से बढ़ना है। हजारों सालों में विकसित की गई मानवतावादी प्रवृत्ति गायब होकर स्वार्थ (खुदगर्जी) या सब कुछ मेरे नियंत्रण में आ जावे जैसी स्वार्थी प्रवृत्ति दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है। असमानता की हालत यह है कि दुनिया के आठ व्यक्तियों के पास दुनिया की नीचे की आधी आबादी के पास जितना धन है। दुनिया को मुट्ठी में रखने की धारणा, परमाणु हथियारों की दौड़ को आगे बढ़ा रही है। हालिया

Scanned with CamS

धरती पर चल रहे लड़ाई-झगड़े 5 करोड़ से अधिक लोगों को बेघरबार कर चुके हैं। मौजूदा परमाणु भण्डार की मारक क्षमता इतनी है कि हमारी पृथ्वी को 7 बार उड़ा सकती है।

सन् 2017 की एक साल की बढ़ी कमाई पर ध्यान केन्द्रित करें तो आक्सफोम इंटरनेशनल की 2018 की रिपोर्ट दर्शाती है कि दुनिया के लोगों ने मिलजुल कर जो कमाई में बढ़ोतरी की है इसका 82 प्रतिशत हिस्सा ऊपर वाले एक प्रतिशत अमीरों के पास चला गया। निचली 50 प्रतिशत दुनिया की गरीब आबादी को उसमें से कुछ नहीं मिला तथा बाकी बची 49 प्रतिशत आबादी को 18 प्रतिशत हिस्सा मिला।

सन् 2017 में भारत के समस्त लोगों की बढ़ी कमाई में से यहां के 1 प्रतिशत अमीर 73 प्रतिशत हिस्सा डकार गये। निचले 50 प्रतिशत लोगों को इसमें से सिर्फ 1 प्रतिशत हिस्सा मिला जबकि बाकी बचे 49 प्रतिशत लोगों के हिस्से में 26 प्रतिशत कमाई आई (आक्सफोम रिपोर्ट-2018)।

भारत में 1 प्रतिशत अमीरों का देश की 58 प्रतिशत धन-दौलत पर कब्जा है। सन् 2016 में भारत में 84 अरबपति थे। जिनके कब्जे में 248 अरब डॉलर की सम्पत्ति थी। सन् 2017 में 17 और नए अरबपति पैदा हो गए। जिससे इनकी गिनती 101 हो गई है। इन अरबपतियों की सम्पत्ति देश की 15 प्रतिशत जी.डी.पी. (सारी वस्तुओं और सेवाओं का कुल जोड़) के बराबर है। जो पांच साल पहले यह सम्पत्ति जी.डी.पी. की 10 प्रतिशत ही थी।

भारत में 21 करोड़ 80 लाख लोगों को पेट भर भोजन नहीं मिलता। दुनिया के कुल भूखों में से 60 प्रतिशत बच्चे हैं। दुनिया में रोजाना 22 हजार बच्चे गरीबी के कारण मर जाते हैं। यू.एन.ओ. की एक रिपोर्ट 13 अक्टूबर, 2017 को प्रकाशित हुई है जिसमें विश्व भूखमरी सूचकांक (G.H.I.) में 119 देशों में से भारत 100वें नम्बर पर है। भारत, नेपाल एवं बांग्लादेश जैसे देशों से भी पीछे हैं। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में बच्चों के कुपोषण की स्थिति पहले से ज्यादा खराब हुई है। यू.एन.ओ. के आंकड़े बताते हैं कि भारत में 40 प्रतिशत भोजन बर्बाद हो जाता है, जिसका रुपयों में आकलन करें तो इसकी कीमत 50 हजार करोड़ रुपये के बराबर है। भूख से पीड़ित दुनिया के 25 प्रतिशत लोग भारत में रहते हैं।

बहुत ही सुन्दर धरती पर यह सब क्यों हो रहा है। इसका कारण धरती पर हर स्रोत (वो चाहे कुदरती हो या मानवीय) को पैसों में तब्दील करके अपने कब्जे में करने की प्रवृत्ति की मानसिकता (समाजशास्त्र) में निहित है।

हमारा आज का विकास मॉडल कुदरती और मानवीय स्रोतों की अवहेलना करके सिर्फ मुनाफे आधारित बना हुआ है। जिसके कारण कुदरत और मानव दोनों ही विनाश के कगार पर पहुंच चुके हैं। यदि हमें इन सब कुदरती और मानवीय स्रोतों को बचाना है तो हमें अपनी जिम्मेवारी और भूमिका पहचाननी होगी। यानि हमें साझी कोशिश के जरिए हमारी इस खूबसूरत धरती को विनाश होने से बचाना होगा।

आप भी प्रकृति-मानव केन्द्रित जन आन्दोलन का हिस्सा बन सकते हैं, इसमें शामिल होकर अपनी टिप्पणी और सुझाव भेजकर और अपने अनुभव इसके साथ जोड़कर (साझे करके) अपनी भूमिका निभा सकते हैं। कुदरत-मानव केन्द्रित रास्ता अपनाओ। प्रकृति-मानव केन्द्रित जन आन्दोलन की पहलकदमी के साथ शामिल होवें क्योंकि यह पर्यावरण एवं लोगों की भलाई के लिए है। (25.09.2018)

आपके जवाब के इन्तजार में

द्वारा : प्रकृति-मानव केन्द्रित जन आंदोलन, भारत

E-mail : sukhdev.nhcpm@gmail.com

नोट : कृपा करके इस पर्चे को पढ़कर फेंकें नहीं औरों को दें। इसका कागज अमूल्य वृक्षों की कटाई करके तैयार हुआ है।

सम्पर्क : मन्नाराम डांगी उदयपुर 9414927387, अशोक भगत 8901873550, रामप्रताप 9414603832, सुखदेवसिंह 9877257265

Scanned with CamS